ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-5 No. 2 January–December 2020

अब्दुल बिस्मिल्लाह का "अपवित्र आख्यन" उपन्यास में चित्रित सांप्रदायिकता

साहिबा खातून,
पीएच.डी शोधार्थी
मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी,
गच्चीबौली, हैदराबाद, 500032

शोध सारांश:-

भारत एक ऐसा देश हैं जहाँ सभी धर्मों के लोग आपस में रहते थे। परंतु कहते हैं वक्त के साथ सब कुछ बदल जाता हैं। आजादी की लड़ाई में हिंदू मुस्लिम ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया था। तब ना कोई हिंदू था ना कोई मुस्लिम था। सिर्फ भारतीय थे, परंतु बंटवारे के बाद जैसे इस भारतीय शब्द को किसी की नजर लग गई। अब लोग भारतीय हिंदू और भारतीय मुस्लिम हैं। ऐसा नहीं है कि आज लोगों में अपनापन नहीं हैं, पर अब अपनेपन में ना जाने कैसी खटास आ गई हैं। अब एक दूसरे के इलाके में भी जाने से लोग डरते हैं। लोग भ्रामक नामों से स्थानों को पुकारते हैं, "छोटा पाकिस्तान शहर के लोग इस इलाके को इसी नाम से संबोधित करते थे, हिंदू रिक्शेवाले रात के वक्त वहां जाने से डरते थे कहीं काट कर लो अपनी दुकानों में ना टाँग दे।"[1] इस तरह की परिस्थितियां दोनों तरफ थी।

समाज में जो सांप्रदायिकता का जहर खोला गया था अब उसकी फसल ने सिर उठा लिया हैं। इन्हीं सब का चित्रण अब्दुल बिस्मिल्लाह ने अपने उपन्यास में किया है। सदियों से मुसलमान इस देश में रह रहे हैं। वेश भाषा, धार्मिक आधार पर भले ही उनमें भिन्नता हो, परंतु अब विचारों में भी बदलाव आ गए हिंदू कभी उन्हें इस देश का नहीं समझते जिस गंगा जमुनी तहजीब की हम बात करते हैं वर्तमान में कभी-कभी देखकर लगता है उसके परखच्चे उड़ गए हैं। ऐसी स्थिति हर जगह हैं, चाहे वह स्कूल कॉलेज हो या फिर कोई और जगह जमील जो पढ़ा लिखा युवक हैं जिसकी सोच काफी विकसित हैं परंतु फिर भी वह वह यह सोचने पर मजबूर है कि" भाषा की भी अपने धर्म होते हैं या धर्मों की अपनी खास भाषाएं होती हैं"[2] इस तरह के सवाल उसे बार-बार परेशान करते हैं परंतु इनका उत्तर उसे नहीं मिलता भाषा का कोई धर्म नहीं होता परंतु विभाजन के बाद ऐसा लगा कि भाषा का भी धर्म होता है। हिंदी हिंदुओं की भाषा और उर्दू मुसलमानों

Copyright ⓒ 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-5 No. 2 January–December 2020

की भाषा इस संबंध में हर किसी की अपनी अलग राय हिंदी पढ़े-लिखे मुसलमानों का होना बहुत जरूरी हो गया है।

इस मुल्क में अब देखिए ना अपने शहर में लेकर मुसलमानों का एक स्कूल है शमशाद हायर सेकेंडरी स्कूल और उसमें भी हिंदी के उस्ताद को है कोई मिश्रा जी इस तरह की मानसिकता लोगों ने बना ली लिए साहित्य हमेशा से समाज में घटित घटनाओं का चित्रण करता है समाज में इस तरह का बदलाव धीरे-धीरे आया हैं पहले तो हम सांप्रदायिकता शब्द का मतलब भी नहीं समझते थे परंतु अब स्थिति बदल गई है समाज में मुसलमानों के हालात कुछ ठीक नहीं हैं, छुआछूत, ऊँच नीच का सामना उन्हें भी करना पड़ता है इसका चित्र अपवित्र आख्यान में मिलता है "जमील ने बहुत सोचा बहुत सोचा मगर उसकी समझ में नहीं आया कि वह संस्कृत क्यों नहीं पढ़ सकता वह रामचरितमानस क्यों नहीं छू सकता गांव में छूत का व्यवहार उसने बहुत देखे हैं ऊंची जाति के लोग छोटी जातियों का छुआ नहीं खाते थे पर पानी भी नहीं पीती थी वह लोग मुसलमानों का छुआ भी नहीं खाते थे छूत और अछूत और मुसलमान उनकी दृष्टि में एक जैसे थे"[3] समाज में विभाजन की ऐसी रेखा खींची है। जिसे लोग चाहकर भी नहीं भुला सकते यास्मीन ने जब जमील से कहा है कि कल को भूल जाओ कि "तुम मुसलमान हो तो जमील कहता है कि नहीं यह तो में चाहकर भी नहीं भूल सकता लोग भूलने नहीं देते"[4] विपिन चंद्र के अनुसार "सांप्रदायिकता एक ऐसी धारणा है जिसके अनुसार एक धर्म को मानने वाले समूह के सदस्यों के सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक हित समान होते हैं इससे पता चलता है सांप्रदायिकता ना केवल धार्मिक बल्कि आर्थिक और सामाजिक कारणों से भी जन्म लेती है"[5] इससे पता चलता हैं कि सांप्रदायिकता ना केवल धर्मिक बल्कि आर्थिक करणों से भी जन्म लेती हैं आजादी के बाद इस तरह की समस्याओं ने जन्म लिया सांप्रदायिकता धर्म को लेकर नहीं है वो तो अब हर जगह व्याप्त है, इसका उदाहरण हमें अपवित्र आख्यान मैं मिलता है किस तरह से जमील को मुस्लिम हिंदी कवि होने की वजह से मुश्किलों का सामना करना पड़ता है जमीन का स्कूल में अपॉइंटमेंट हुआ इस संबंध में उसके जेहन में एक सवाल आ गया जमील सोच रहा था कि "उसका अपॉइंटमेंट इसलिए नहीं हुआ कि वह एक योग्य युवक है बल्कि इसलिए हुआ कि वह मुसलमान है अगर वह मुसलमान ना होता तो अगर उसका नाम जमील अहमद की जगह राजाराम होता तो"[6] इस संबंध में रवीश कुमार कहते है कि "मरना सिर्फ कब्रिस्तान में दफन कर देना या जला देना नहीं है जो आपको बोलने से लिखने से आपको कहने से और सुनने से डराता है हम मर गए हैं"[7] ऐसा नहीं है, कि यह सोच अनपढ़ों की है इस सोच को ज्यादा हवा पढ़ा लिखा तबका देता है।

Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-5 No. 2 January–December 2020

जमील और यासमीन दोनों पढ़े लिखे हैं, परंतु दोनों की सोच में जमीन आसमान का फर्क है यासमीन की सोच विकसित नहीं हुई उसकी सोच भी उन सब की तरह है जो भाषा को धर्म के चश्मे से देखते हैं या यहां वह कहती है कि "जी नहीं मगर उससे क्या होगा भाई साहब आप जानते हैं नहीं हर यूनिवर्सिटी के हिंदी विभाग में ब्राह्मणों ठाकुरों का वर्चस्व है"[8] इस तरह की सोच आज भी हमारे समाज में व्याप्त है नादा साहब का यह कथन यहां दृष्टव है कि " किस तरह जमाना बदलता है। पहले लोग खाने-पीने में परहेज करते थे मगर दिल के साफ होते थे और अब अब साथ बैठकर खाते पीते हैं मगर दलों में साइयां भरी हुई है।"[9] इस कथन में गंभीरता है जो वर्तमान सोच को आइना दिखा रही सांप्रदायिकता एक ऐसा जहर बन गया है जो दिनों दिन बढ़ता ही जा रहा है

मुस्लिम समाज में हमेशा से इसका असर देखा गया है। आज भी मुस्लिम समाज को हमेशा शक भरी नजरों से कहीं ना कहीं देखा ही जाता है और इसके गंभीर परिणाम भी भुगतने होते परंतु ऐसा नहीं है कि यह असर सिर्फ एक तरफ का हो समाज में जो कुछ भी घटित होता है भुगतना सब को पड़ता है इस उपन्यास में लेखक ने भाषा को लेकर गंभीर चर्चा की और सवालिया निशान खड़े कर दिए हैं जमील की जिस स्कूल में नौकरी लगी थी वो हिंदुस्तान की सभ्यता का एक छोटा सा नमूना पेश कर रहा था जिस तरह का माहौल था उसे जमील के अंदर घुटन पैदा हो जाती थी और वह सोचने को मजबूर भी हो जाता था कि पढ़े-लिखे लोग भी भाषा को धर्म के चश्मे से देखते हैं, पढ़ने के बावजूद भी अगर लोगों की सोच में बदलाव नहीं आया तो फिर का क्या फायदा है, जमीन इन्हीं सवालों से हमेशा घूमता रहता क्या पहचान के आगे काबिलियत का कोई मोल नहीं समाज में हर जगह यह प्रश्न आज भी व्याप्त है जमील का दोस्त इकबाल जब यह कहता है "कि हम यहां दूसरे दर्जे के शहरी हैं एक सर्कुलर मुल्क होते हुए भी हिंदुस्तान असल में हिंदू मुल्क है, इस पर जमील कहता हैं कि" वह तो बहुत से हिंदू भी हो सकते हैं, जैसे हरिजन ऊंचे ऊहदो पर उनकी तादाद भी बहुत कम है, तो लेकिन उनके लिए कोटा तो है ना और हमारे लिए क्या है।"[10] इस प्रश्न का जमील के पास कोई जवाब नहीं था इस प्रकार की सोच समाज में आज भी कहीं ना कहीं देखने को मिल जाएगी इंसान की एक बहुत बुरी फितरत है, कुछ नहीं कर पाता तो बस हर चीज का दोष व्यवस्था समाज पर ही डाल देता है, यही एक इक़बाल के साथ भी हुआ परंतु उसका सवाल फिर से बहुत से सवाल खड़े कर गया सांप्रदायिकता का जहर अक्सर शहरों में देखने को मिलता है। गांव में आज भी लोग मिल जुलकर रहते शहरों में लोग एक दूसरे के विचारों को कमतर दिखाने की कोशिश करते हैं।

Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-5 No. 2 January–December 2020

परंतु गांव में ऐसा नहीं है, उपन्यास के पात्र जमीन की पत्नी एक ऐसे गांव से होती है जहां हिंदू मुस्लिम परिवार आपसी मेलजोल के साथ रहते हैं जमील की पत्नी को तो **'मीम'** शब्द का मतलब भी नहीं पता वह हिंदू संस्कृति से प्रभावित गांव से थी। इसलिए उसके पहनावे में भी थोड़ा बदलाव बिंदी लगाती थी सिंदूर लगाती थी इस कारण जमीन के मुसलमान उसे हिंदू समझते हैं और जमील को मुफ्त की सलाह देते हैं कि हर "हर्ज है जमील साहब सिद्दीकी सामने जोर देकर इस्लाम इसकी इजाजत नहीं देता हमें काफ़िरो जैसा बाना नहीं तैयार करना चाहिए"[11] समाज में सिद्दीकी साहब जैसे लोग होते हैं, जो नाम और पहनावे को लेकर परेशानी खड़ी करते इस तरह के लोग समाज में आज भी व्यक्ति हर चीज को सांप्रदायिक रंग देने की कोशिश में लगे रहते हैं, उन्हें तो बस अपनी बात को सही साबित करना होता है इसलिए जब शहर में दंगे हुए तो उसका चित्र लेखक ने प्रस्तुत किया "बहुत से लुंगी पहनने वाले अपने बेटों की पैंट पहनकर कर निकले थे, बहुत से माथे पर चंदन गायब था स्त्रियों ने अपना सिंदूर छिपा लिया था चूड़ीदार पजामा पहनने वाली बुढ़िया ऊंट पटांग साड़ियां बांधी थी"।[12] इस तरह की समस्याओं को लेखक ने उपन्यास के माध्यम से उजागर किया है।

अपवित्र आख्यान में जिस तरह से समाज में व्याप्त सांप्रदायिक समस्याओं को लेखक ने चित्रित किया है, वह वास्तव में अपने आप में महत्वपूर्ण वर्तमान समय में भी समाज में कहीं ना कहीं इस तरह की समस्याएं मौजूद हैं जिस तरह जमील को हिंदी पढ़ने के चक्कर में मुश्किलों का सामना करना पड़ता है यह सिर्फ एक जमील की कहानी नहीं ऐसे हजारों होंगे इस प्रकार देखा जा सकता है कि लेखक ने किस तरह समाज में व्याप्त सांप्रदायिकता के जहर को आईना दिखाया हर जगह ऐसा नहीं है परंतु इसे अभी नहीं थामा गया तो विनाश का रूप लेते हुए इसे देर नहीं लगेगी लेखक ने उपन्यास के पात्र ज्यादातर पढ़े-लिखे हैं परंतु सवाल यह है कि अगर पढ़ लिख कर भी हमारी सोच विकसित नहीं हुई पढ़ लिख कर भी इन सब चीजों को देखने लगे तो आखिर इस पढ़ाई का क्या फायदा मोटी मोटी डिग्रियां लेने का क्या फायदा जब सोची नहीं खुली यह सवाल पूरी व्यवस्था और समाज से लेखक कर रहा है इस सवाल का जवाब किसी के पास नहीं बातें तो पढ़ा लिखा बातें तो बहुत बड़ी-बड़ी करता है हकीकत उससे मैं उस से इत्तेफाक रखता है हकीकत कुछ और ही होती है हम अपनी सोच को नहीं बदल पाए तो इस सोच के परिणाम अत्यंत ही गंभीर हो सकते हैं, लेखक इस उपन्यास के माध्यम से ही दिखाना चाहता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ :-

Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-5 No. 2 January–December 2020

1 अपवित्र आख्यन, अबुल बिस्मिल्लाह, पृ.स. 14,

2 अपवित्र आख्यन, अबुल बिस्मिल्लाह, पृ.स. 16,

3 अपवित्र आख्यन, अबुल बिस्मिल्लाह, पृ.स. 21

4 अपवित्र आख्यन, अबुल बिस्मिल्लाह, पृ.स. 23,

5 विभूति नारायण राय, सांप्रदायिक दंगे और भारतीय पोलिस

6 अपवित्र आख्यन, अबुल बिस्मिल्लाह, पृ.स. 53,

7 रवीश कुमार, हमारे बगल में बेठ खतरनाक वक्त

8 अपवित्र आख्यन, अबुल बिस्मिल्लाह, पृ.स. 75,

9 अपवित्र आख्यन, अबुल बिस्मिल्लाह, पृ.स. 95,

10 अपवित्र आख्यन, अबुल बिस्मिल्लाह, पृ.स. 39,

11 अपवित्र आख्यन, अबुल बिस्मिल्लाह, पृ.स. 105,

12 अपवित्र आख्यन, अबुल बिस्मिल्लाह, पृ.स. 142,

Copyright © 2020 Authors